

वेदों की ओर लौटो !

॥ ओ३म् ॥

श्रेष्ठ मानव बनो !

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाने
हेतु कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वेदोद्धारक, युगप्रवर्तक
महर्षि दयानन्द

तपस्वी व्यक्तित्व की जन्मशताब्दी
पू. स्वामी श्रद्धानन्दजी
(हरिश्चन्द्र गुरुजी)

वर्ष १३ अंक ०३ १० मार्च २०१३



पुलवामा आतंकी हमले में शहीदों को
अश्रुपूरित श्रद्धांजलि..!





बीदर में प्रधानमंत्री
श्री नरेन्द्रजी मोदी का
आर्य समाज की ओर
से स्वागत-अभिनन्दन
करते हुए कर्नाटक
आर्य प्र.सभा के प्रधान
श्री सुभाषजी
आह्वित।

आर्य समाज
कांकरिया(गुजरात)
में महाराष्ट्र के
तपस्वी वानप्रस्थी
वैद्य श्री
विज्ञानमुनिजी का
सन्मान करते हुए
आर्य पदाधिकारी ।



रामपुर
(ता.धर्माबाद) के
जि.प.विद्यालय में
व्याख्यान के
पश्चात् विद्यालय
को म.दयानन्द की
प्रतिमा भेंट करते
हुए पं.अनिलजी
आर्य एवं अन्य
कार्यकर्ता।



महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र



वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११९
दयानन्दाब्द १९५

कलि संवत् ५११९
फाल्गुन

विक्रम संवत् २०७५
१० मार्च २०१९

प्रधान सम्पादक
राजेन्द्र दिवे
(९८२२३६५२७२)

मार्गदर्शक सम्पादक
डॉ. ब्रह्ममुनि

सम्पादक
डॉ. नयनकुमार आचार्य
(९४२०३३०९७८)

सहसम्पादक

प्रा. देवदत्त तुंगार (९३७२५४९७७७) प्रा. ओमप्रकाश होलीकर (९८८१२१५६१६),
प्रा. सत्यकाम पाठक (९९७०५६२३५६), ज्ञानकुमार आर्य (९६२३८४२२४०)

अ
नु
क
म

हिन्दी	१) श्रुतिसुगन्ध	४
वि	२) सम्पादकीयम्	५
भा	३) म. दयानन्द का स्त्रीजाति उद्धारकार्य	७
ग	४) तत्त्वनिष्ठ आर्य व्यक्तित्व-स्वा. सै. बासरेजी	११
	५) समाचार दर्पण	१४
	६) सभा के मानवकल्याणकारी उपक्रम	१६
मराठी	१) उपनिषद संदेश/दयानंद वाणी	१७
वि	२) आणि दयानंद जागे झाले!	१८
भा	३) दानदाते राऊत दांपत्य परिचय	२४
ग	४) स्व. केशरबाई राऊत स्मृति स्थिरनिधी	२५
	५) शहीदांना श्रद्धांजली व वीर सैनिकांचे अभिनंदन!	२८
	६) शोकवार्ता	२८

* प्रकाशक *

मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,
परली-वैजनाथ ४३१५१५

* मुद्रक *

वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परली-वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क

वार्षिक रु. १००/-

आजीवन रु. १०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि. बीड ही होगा।

वैदिक गर्जना-विशेषांक ***

३

*** मार्च-२०१९



सुनीतिभिर्नयसि त्रायसे जनं यस्तुभ्यं दाशान्न तमंहो अश्रवत्॥

ब्रह्मद्विषस्तपनो मन्युमीरसि बृहस्पते महि तत्ते महित्वनम्॥

(ऋग्वेद २/२३/४)

पदार्थान्वय—है (बृहस्पते) बड़ों की पालना करनेवाले ईश्वर वा विद्वान्! आप (सुनीतिभिः) उत्तम धर्मवाले न्याय मार्गों से जिस (जनम्) जन को (नयसि) पहुंचाते हो और (त्रायसे) रक्षा करते हो (यः) जो (तुभ्यम्) तुम्हारे लिये (आत्मा) (दाशात्) देता है, (तम्) उसको (अहं:) पाप (न, अश्रवत्) नहीं प्राप्त होता। जो तुम (ब्रह्मदिषः) वेद और ईश्वर के विरोधियों पर (तपनः) ताप करनेवाले (मन्युमीः) क्रोध का मान करनेवाले (असि) है, (ते) आप के (तत्) उस (महित्वनम्) बड़प्पन की हम लोग प्रशंसा करें।
भावार्थ — जो मनुष्य सत्यभाव से जगदीश्वर वा प्राप्त विद्वान् के सम्बन्ध में अपने आत्मा को चलाते हैं उनको जगदीश्वर वा धार्मिक विद्वान् पापाचरण से निवृत्त कर शुभ गुण कर्म स्वभावों से युक्त कर पवित्र उत्पन्न करता है। और जो वेद वा ईश्वर के विरोधी पापाचारी हैं, उनको अधोगति को पहुंचाता है यही इन दोनों की उपासना और सङ्ग से लाभ होता है।

(महर्षि दयानन्द कृत ऋग्वेद भाष्य)

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

अंतरंग व साधारण सभा बैठक

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरंग सदस्यों तथा साधारण सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आगामी दि. २९ मार्च २०१९ (शुक्रवार) को आर्य समाज, गांधी चौक, लातूर में अन्तरंग एवं साधारण सभा-बैठकों का निम्न समयानुसार आयोजन किया गया है।

* दोप. १२.३० बजे - अंतरंग बैठक * दोप. २.३० बजे - साधारण बैठक

अतः आप सभी से निवेदन है कि इन दोनों बैठकों में अवश्य उपस्थित रहें।
अन्य भी सदस्यों को इसकी जानकारी दें। - राजेन्द्र दिवे (सभामन्त्री)

सम्पादकीयम् वीर जवानों, तुम्हारा वन्दन! अभिनन्दन!!

शत्रुओं से लड़ना और उन्हें जीतना आसान नहीं होता, लेकिन कुटनीति के साथ उनपर विजय पाना उससे भी कठिन माना जाता है। जैसे कि इस समय हमारे प्रधानमंत्री श्री मोदीजी, कुशल राजनयिकों और बहादुर जवानों ने कर दिखाया है। उनका अभिनन्दन! गत माह १४ फरवरी को पुलवामा में हुए आतंकी हमले में देश के अर्धसैनिक बल के ४० से अधिक जवानों की मृत्यु हुई। हमारे वीर सिपाहियों पर पाकपोषित 'जैश ए मुहम्मद' के आतंकवादी ने आत्मघाती बम विस्फोट कर उन्हें मार डाला। अपने सैनिकों के इस बलिदान से सारा देश ही शोकसागर में डूब गया। प्रत्येक भारतवासी का खून खौल उठा, जनविक्षोभ की लहरें सर्वत्र छा गयी और प्रधानमंत्री मोदी को कहना पड़ा - 'जवानों के खून की एक-एक बूंद का बदला लिया जायेगा।' इसी दौरान श्री मोदीजी ने सेना को आतंकवाद से निपटने के लिए खुली छूट भी दे दी। लगातार १०-१२ दिनों तक रणनीतियाँ बनती रही और तेरहवें दिन २६ फरवरी को प्रातः वायुसेना ने पाकिस्तान में ४० कि.मी. तक घुसकर बालाकोट के जैश-ए-मुहम्मद के महत्वपूर्ण आतंकी अड्डों को तबाह कर दिया। १२ मिराज २००० लड़ाकू विमानों ने दो मिनट की बमबारी में लगभग ३५० आतंकियों को मौत के घाट उतार दिया। इस कार्रवाई के पश्चात् हमारे लड़ाकू विमान सुरक्षित वापिस लौट आये। उनकी इस बहादुरी पर हर भारतवासी गर्वानुभूति करता है। उनका हृदय से अभिनन्दन करता है।

तत्पश्चात् दूसरे दिन पाकिस्तान ने जवाबी कार्रवाई करते हुए अपनी ओर से छह विमान भारत की ओर भेजे, तब भी हमारी वायु सेना ने उनका कड़ा प्रतिकार किया। इसमें उनका एक विमान गिरा दिया, तो अपना मिग २१ विमान भी नष्ट हुआ। इससे भारतीय विंग कमांडर पायलट अभिनन्दन वर्तमान पाकिस्तान में जा फंसे। हमारे इस जाँबाज वीर सैनिक ने पाकिस्तान की धरती पर भी भारत के स्वाभिमान को बरकरार रखा। इसलिए 'अभिनन्दन' का अभिनन्दन किन शब्दों में करें?

विशेष बात है कि अभिनन्दन की रिहाई के लिए भारत ने पाकिस्तान से किसी प्रकार की शर्त न रखते हुए अभिनन्दन को वापिस लौटाने की मांग की। तब पाकिस्तान को व्हीएनआ अभिसमय पर हस्ताक्षर होने की वजह से उन्हें अभिनन्दन को सकुशल भारत को सौंपना पड़ा। यह पूरा घटनाक्रम लगातार १५ दिनों तक चलता रहा। लेकिन इसमें हमारी ही विजय हुई। समग्र विश्व पटल पर पाकिस्तान के आतंकी चेहरे को दुनिया के सामने रखा। पाकिस्तान किस तरह आतंकियों को आश्रय देता

रहा है? इसके कई सबूत भारत ने प्रस्तुत किये। इस बार के हमले के पाक समर्थित आतंकी चेहरे को भी सभी देशों के सामने रखा। परिणामस्वरूप अमेरिका, फ्रान्स, रशिया, इजरायल आदि देशों ने भारत की मदद करने का आश्वासन दिया और चीन समेत अन्य देश भी आतंकवाद के खिलाफ खड़े हुए। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने भी आतंकी हमले को गलत बताकर उसका निषेध किया। यदि भारत चाहता तो तुरन्तही पाकिस्तान पर हमला कर सकता था, किन्तु 'शेर छलांग लगाने से पहले चार कदम पीछे चलता है' की कहावत के अनुसार भारत के नेता व सेनाधिकारियों ने विचार व धैर्यपूर्वक कदम उठाये। सारे विश्व को पाक के नापाक इरादों से अवगत कराते हुए वह कश्मीर के माध्यम से भारत में आतंकवाद के भस्मासूर को कैसे बटावा देते आ रहा है? इसकी साफ-साफ विकृत प्रतिमा दुनिया के सामने रखी। इसपर पुलवामा हमले की वास्तविकता सभी राष्ट्रों ने जान ली। परिणामस्वरूप इस्लामी राष्ट्र संघ के अधिवेशन में सम्मिलित होने का मौका भारत की विदेशमन्त्री सुष्मा स्वराज को मिला। जिसमें उन्होंने पाकिस्तान की दुष्ट चाल व आतंकी नीतियों से सभी इस्लामी देशों को भी अवगत कराया। इस पर पाकिस्तान की बौखलाहट और अधिवेशनपर डाला गया बहिष्कार उसकी पोल खोलनेवाला है।

पुलवामा के आतंकी हमले के बाद भारतद्वारा किया 'एअर स्ट्राइक' निश्चय ही इस देश की सामरिक युद्धनीति के साथ ही कुटनीति की भी सफलता मानी जाती है। १९७१ के बाद पड़ोसी देश को यह करारा जवाब मिला है। इस घटना से आतंरिक दृष्टि खोकला बने पाकिस्तान की सारे विश्व पटल पर नंगी तस्वीर सामने आ चुकी है। आखिर कितना खून बहता रहेगा? स्वतन्त्रता के बाद कश्मीर का मुद्दा नासूर बना रहा है। कश्मीर व लद्दाख को अलग करने की मांग भारत के लिए संकट बन गयी है। कश्मीरी नागरिक स्वयं को भारतीय मानने के लिए तैयार नहीं है। आये दिन सेना पर पथराव होता है। आतंकी सरगनाओं को छिपने के लिए पनाह दी जाती है। इसी स्थिति का लाभ उठाकर पाकिस्तान आतंकवादी हमले बटाता है और आये दिन हमारे जवानों की मृत्यु हो जाती है। अटलजी के छह साल में २९२९ जवान शहीद हुये, मनमोहन सिंह के दस वर्ष में ११७७ जवान शहीद हुए और मोदीजी के कार्यकाल में ३८७ जवान शहीद हुये। तब क्या हमारे वीर जवान अपना खून व्यर्थ ही बहाते रहेंगे? इसलिए सरकार कोई भी हो एअर स्ट्राइक की भाँति आतंकवादियों को समाप्त करना ही पहली प्राथमिकता होनी चाहिये और वह भी अन्य देशों का समर्थन प्राप्त कर..! एकजुट होकर आतंक का राक्षस खतम किये बगैर सुख और शान्ति कल्पना करना व्यर्थ है। पुलवामा के शहीदों को विनम्र श्रद्धांजलि एवं हमारी विजयी सेना का अभिनन्दन...!

- नयनकुमार आचार्य

महर्षि दयानन्द का स्त्रीजाति उद्धारकार्य

- प्राचार्य देवदत्त तुंगार

स्त्री-पुरुष समातना, नारी उद्धार, स्त्री शिक्षा आदि विषयों को लेकर सामाजिक जीवन में उच्च स्तर से वक्तव्य दिये जाते हैं, तथा कुछ वर्षों से इसपर पर्याप्त मात्रा में लेखन भी हुआ है, जो कि स्वागतयोग्य बात है।

बहुचर्चित इस विषय का समाज में कहाँ तक आचरण होता है, यह जब हम देखते हैं तो निराशा ही हाथ लगती है। उन्नीसवीं शती में अनेक सुधारवादी आन्दोलन हुए, जिसके परिणाम स्वरूप महिला वर्ग की कुछ हद तक उन्नति हुई है। किन्तु अभी भी अभीष्ट उपलब्धी नहीं हुई। कई महापुरुषों ने स्त्री जाति के लिए व्यापक अभियान चलाया। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में जब हम इन आन्दोलनों की निष्पक्ष समालोचना करते हैं, तो दीखता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा उनके द्वारा संस्थापित 'आर्य समाज' ने जो कार्य किया है, वह केवल सराहनीय ही नहीं, अपितु आज भी प्रेरक तथा अनुकरणीय है।

अंग्रेजी राज का कुछ सुपरिणाम - भारत में लगभग ७०० साल मुगलों ने तथा १५० वर्ष अंग्रेजों ने राज किया।

अंग्रेजी राज ने भारतीय समाज में निश्चित रूप से कुछ क्षेत्रों में प्रगति की इसमें संदेश नहीं। पश्चिम की समाजरचना एवं विचारधारा का प्रभाव भारतीय समाज पर हुआ। इस सन्दर्भ में ब्राह्म समाज के संस्थापक राजा राममोहन रॉय समाजसुधारक के अग्रणी माने जाते हैं। सती प्रथा उन्मूलन का श्रेय आपको ही दिया जाता है। लॉर्ड बेंटिंज तथा अन्य अंग्रेजी शासकों को सती प्रथा बन्द करवाने हेतु कानून बनाने में राजाराम मोहनरॉय १८२९ साल में सफल हुए। स्त्री जाति की प्रगति तथा विकास में सती प्रथा का स्थान महत्वपूर्ण है। स्त्री शिक्षा, बालविवाह निषेध, प्रौढ विवाह को प्रोत्साहन आदि कार्य भी राजाराम मोहनरॉय ने किये। आप द्वारा स्थापित ब्राह्म समाज बंगाल राज्य के कुछ हिस्सों तक ही सीमित रहा। जन्माधारित ब्राह्मण जाति को वरीयता देने से ब्राह्मसमाज बहुसंख्यक समाज से दूर ही रहा।

म.फूले एवं म.दयानन्द - राजाराम मोहनरॉय के पश्चात् दो महापुरुषों ने समग्र सामाजिक क्रांति का बिगुल बजाया। एक थे महात्मा ज्योतिराव फूले तथा दूसरे थे महर्षि दयानन्द सरस्वती! महात्मा ज्योतिबा

फूले (१८२७ से १८९०) ने अपने सुधारवादी विचारों के प्रसार हेतु २४ सितम्बर १८७३ को सत्यशोधक समाज की स्थापना की। 'मनुष्य विद्या प्राप्ति व अपने गुणों से श्रेष्ठ होता है, जन्मगत जाति से नहीं!' इसका पुनरुच्चार कर ईश्वर और साधक भक्त के बीच पुरोहित जैसे मध्यस्थ(बिचौलिया) की आवश्यकता नहीं होती, यह सत्यशोधक संस्था की अनुधारणा थी। संस्कृत मन्त्र की जगह सीधी-सीधी मराठी अर्थात् क्षेत्रिय भाषा में विवाह विधि की परिपाठी सत्यशोधक समाज ने शुरू की।

स्त्री शिक्षा का महत्त्वपूर्ण कार्य महात्मा फूले ने महाराष्ट्र में सबसे पहले शुरू किया। १८४८ अगस्त में पूना में कन्या विद्यालय की स्थापना महात्मा फूले ने श्री भिडेजी के बाड़े में (बुधवारपेठ) की। भारत में कन्याओं की यह प्रथम पाठशाला है। उनकी धर्मपत्नि सावित्रीबाई ज्योतिराव फूले यह भारत की पहली महिला शिक्षिका है। उस समय कन्या विद्यालय की स्थापना शैक्षिक जगत् में क्रांति का सूत्रपात था। मराठी साहित्य में नव-विचारों के पुरोधा महात्मा फूले है। आपने कई ग्रन्थ लिखे। वे सब ग्रन्थ महाराष्ट्र सरकारने समग्र फूले वाङ्मय में पुनर्प्रकाशित किए। प्रारम्भ के काल में सत्यशोधक समाज ने ठोस समाज सुधार का काम

किया। कालान्तर में यह संगठन 'सत्ता-शोधक' समाज हुआ।

महाराष्ट्र अग्रेसर - महर्षि दयानन्द (१८२४ से १८८३) सरस्वतीने महाराष्ट्र में (मुंबई में) १० अप्रैल १८७५ को आर्य समाज की स्थापना की। महाराष्ट्र प्रान्त सुधारवादी आन्दोलन का प्रारम्भ से ही गढ़ रहा है। सत्यशोधक समाज, प्रार्थना समाज, परमहंस सभा, आर्य समाज आदि सभी संस्थाओं की स्थापना महाराष्ट्र में विशेष कर मुंबई तथा पुणे में हुई। ब्राह्मसमाज केवल बंगाल में स्थापित हुआ। ब्राह्म समाज तथा प्रार्थना समाज केवल ईश्वर पर तथा व्यक्ति के व्यक्तिगत उन्नयन पर बल देते थे। सत्यशोधक समाज और आर्य समाज ये ईश्वर प्रार्थना तो करते थे, किन्तु अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक कार्यक्रम जोर शोर से अमल में लाते थे। कई रचनात्मक कार्यक्रमों को अमली जामा पहनाने में आर्य समाज तथा सत्यशोधक समाज अग्रणी रहे। महर्षि दयानन्द समग्र क्रांति के पुरोधा थे। स्त्री जाति का उत्थान इसी क्रांति का अटूट हिस्सा था। महर्षि की प्रेरणा से भारत में कई कन्या गुरुकुलों की स्थापना हुई। कन्याओं को ब्रह्मवादिनी बनाने में इन गुरुकुलों का अभूतपूर्व व असाधारण योगदान रहा है। आज भारत में स्त्री जाति का जो कुछ उत्थान दिखलाई देता है, वह महर्षि दयानन्द तथा उनके

आर्य समाज का ही ऐतिहासिक क्रान्ति कार्य है। यह कार्य और अधिक व्यापक पैमाने पर करने की महती आवश्यकता है। राजाराम मोहनराय, महात्मा फूले, सुधारकाचार्य गोपाल गणेश आगरकर, विष्णुबुवा ब्रह्मचारी, न्या.महादेव गोविंद रानडे, लोकहितवादी गोपाल हरि देशमुख तथा अन्यान्य आदरणीय महापुरुषों ने सामाजिक परिवर्तन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी इस में कोई मतभेद नहीं। किन्तु समग्र एवं मौलिक परिवर्तन की दिशा में महर्षि दयानन्द ने जो दृष्टिकोन अपनाया तथा समाज क्रान्ति के लिए जो प्रेरणा दी उससे आमूलचूल परिवर्तन की प्रक्रिया गतिमान हुई। यही तो महर्षि के कार्य की विशेषता है। निश्चित रूप से यह महर्षि का असाधारण, अतुलनीय एवं ऐतिहासिक कार्य है।

स्त्री जाति का सम्मान बढ़ाकर समस्त महिला वर्ग में आत्माभिमान एवं अस्मिता महर्षि दयानन्दने जागृत की। महिला किसी भी दृष्टि से पुरुषों से कम नहीं। घर की वह केवल शोभा नहीं, वह तो परिवार की समृद्धि एवं खुशहाली की देवता है। संसार रूपी रथ का वह बराबरी का पहिया है। यह मानसिकता तथा विचारप्रवणता महर्षि दयानन्दजी की भारतीय समाज को अनूठी देन है। स्त्री जाति का उत्थान महर्षि ने जितना किया, उसकी तुलना में किसी ने

भी कार्य नहीं किया। केवल महाराष्ट्र या मुंबई तक आर्य समाज सीमित नहीं रहा, अपितु भारत तथा अन्य देश-विदेशों में भी महर्षि का यह विचार फैल गया। मॉरिशस, अमरिका, ग्रेट ब्रिटेन, आफ्रिका आदि दूर-दूर के देशों में महर्षि द्वारा प्रवर्तित स्त्री जाति उत्थान का कार्य प्रभावशाली सिद्ध हुआ। स्त्री जाति के प्रति महर्षि की उदार विचारधारा थी। वर के चयन में वधू की इच्छा सर्वोपरी होनी चाहिए। माता-पिता की अपेक्षा स्वयं वधू-वर ने अपना विवाह तय करना महर्षि को अभिप्रेत था। 'स्वयं-वर' को आपने प्राथमिकता दी। प्रगतिशील विचारों के महर्षि आधुनिक काल के प्रणेता है।

आधुनिक काल में शूद्रातिशूद्र कह कर अपमानित किये गये महिला वर्ग को एवं कथित पिछड़ी जातियों को ज्ञानप्राप्ति का तथा विद्याध्ययन का अधिकार महर्षि दयानन्द ने दिलाया। सूर्यप्रकाश व नदी का पानी जिस प्रकार समाज के सब वर्गों के लिए खुला रहता है, उसी प्रकार ईश्वरदत्त वेदज्ञान पर महिलाओं तथा पिछड़े समझे गये बहुजन समाज का पूर्ण अधिकार है। यह क्रान्ति का डंका आलम में ऋषि दयानन्द ने १२५ साल पूर्व बजवा दिया। परिणाम स्वरूप आज महिलायें प्राध्यापिका, पत्रकार, जिलाधिकारी, सेनाधिकारी, पुलिस विभाग में

उच्चाधिकारी के रूप में कार्यरत दिखाई दे रही है। महिलाओं ने भी रणक्षेत्र में अतुलनीय साहस और धैर्य का परिचय दिया है। पूर्व काल की यह दैदीप्यमान परम्परा सद्यकालीन परिवर्तित स्थिति में भी मादाम कामा, इन्दिरा गान्धी, सरोजिनी नायडू, कॅप्टन लक्ष्मीदेवी सहगल आदियों ने पुनरुज्जीवित की, यह महर्षि दयानन्द के विचारों का ही सुपरिणाम है।

विधवा विवाह, बालविवाह प्रतिबंध, सतीप्रथा का खण्डन, कन्याओं का वेदाध्ययन का अधिकार, गुणकर्म स्वभाव के अनुरूप वर का चयन करने का वधू को अधिकार दिलाना आदि क्षेत्रों में विवेकनिष्ठा से महर्षि ने मार्गदर्शन किया। केवल विचारों के प्रचार करने तक ही

अपना कार्य सीमित न रखकर आपने 'आर्य समाज' के माध्यम से इस युगकारी परिवर्तन को महर्षि ने साकार किया।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में नारी जाति के सर्वांगीण विकास पर दृष्टिपात करने से हमें पता चलता है कि कट्टरपंथी स्थितिशील समाज का परिवर्तनशील गतिमान समाज में रूपान्तर करने में उन्नीसवीं शताब्दि में सर्वाधिक प्रभावशाली कदम महर्षि दयानन्दजी ने ही उठाये हैं। इस महान युगद्रष्टा को समाज के सभी वर्गों ने विशेषकर स्त्री जाति ने बारंबार नमन करना चाहिए। (लेखक ज्येष्ठ पत्रकार एवं कर्मठ आर्य कार्यकर्ता हैं।)

— समीप कला मन्दिर, नान्देड

मो. ९३७२५४१७७७



स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम

—० आप भी सहाय्यक बनें ०—



कृपया गुरुकुल प्रेमी माता-बहनों व सज्जनों की सेवा में निवेदन है कि, वेद, व्याकरण, संस्कृत के अध्ययन व अध्यापन तथा आदर्श मानव निर्माण की दृष्टि से आर्य समाज परली द्वारा शहर से ३ कि.मी. दूरी पर आप सभी का प्यारा गुरुकुल 'स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम' इस समय प्रगतिपथ पर हैं। दानदाता सज्जन दिल खोलकर पवित्र भाव से दान दे रहे हैं। बहुत सारे सज्जन एवं दानी 'आर्य कार्यकर्ता प्रतिमाह रु. १००० देने के लिए कृतसंकल्पित हो चुके हैं। कृपया आप भी अपनी पवित्र दानराशियाँ (रु. १०००, रु. ५०००, रु. ११०००) इस गुरुकुल के लिए निम्नलिखित बैंक खाते पर भेजकर पुण्य के भागी बनें।

खाता धारक का नाम — मंत्री, आर्य समाज परली-वैजनाथ

बैंक का नाम—भारतीय स्टेट बैंक, मोंढा मार्केट, परली-वै. जि. बीड

बैंक खाता क्र. 11154152876, IFSC Code SBIN0003406

तत्त्वनिष्ठ आर्य व्यक्तित्व : स्वा.सै.लक्ष्मणराव बासरे

— डॉ.नयनकुमार आचार्य

वैदिक विचारों पर बड़ी निष्ठा व कर्मठता के साथ चलकर समाज को नवदिशा प्रदान

करनेवाले समर्पित आर्य तत्वदर्शियों के कारण ही यह संसार चल रहा है। उन्हीं की पावन स्मृतियों को हृदय में संजोकर ही आनेवाली पीढ़ियां निरन्तर गतिमान रहती हैं। महाराष्ट्र के तपस्वी व्यक्तित्व दिवंगत



पू.लक्ष्मणरावजी रामन्ना

बासरे (आर्य) इन्हीं में से एक थे। जीवनभर वे कठोरतापूर्वक वैदिक सत्यसिद्धान्तों का पालन करते रहे। नान्देड जिलान्तर्गत देगलूर के समीपस्थ 'शहापुर' यह छोटासा ग्राम! यहीं के एक कृषक परिवार में जन्में श्री लक्ष्मणजी पहले से ही प्रखर सत्यानुगामी रहे। क्षात्रतेज का अनूख प्रभाव उनके जीवन में इतस्ततः दिखाई पड़ता था।

गुरुकुल घटकेश्वर के आचार्य एवं हैदराबाद स्टेट के वैदिक धर्मप्रचारक श्री बन्सीलालजी व्यास का सान्निध्य पाकर उन्हीं की प्रेरणा से आप आर्य विचारों के अनुगामी बनें। एक वर्ष तक गुरुकुल में

रहकर स्वाध्याय व साधना की। अपने शहापुर ग्राम में भी सन १९५६ में आर्य

समाज की स्थापना की।

इन्हीं के प्रयत्नों से गांव में अनेकों वैदिक विद्वान् प्रचारार्थ आते रहे। फलस्वरूप शहापुर ग्राम व परिसर में वेदप्रचार होता रहा। श्री लक्ष्मणरावजी अपने अनूठे वैराग्यपूर्ण जीवन के परिणामस्वरूप लोकव्यवहार से कुछ दूर रहे। इसी कारण

सहधर्मिणी श्रीमती हिराबाई को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। फिर भी उतनी ही सहनशीलता के साथ उन्होंने अपना पतिव्रतधर्म निभाया। इकलौते पुत्र चि.गणेशदेवजी आर्य को गुरुकुल पढ़ने हेतु दिल्ली एवं अलिगढ भेजा। तत्पश्चात् हैदराबाद के पं.गोपदेवजी के सान्निध्य में रखा। यहीं पर रहकर वे वैदिक साहित्य अध्ययन बनें और उपदेशक, प्रचारक बनकर महाराष्ट्र में कार्यरत रहे। आजकल वे 'पं.मानवमित्र' के रूप में बीदर में अध्ययन चिन्तन के साथही स्वास्थ्य चिकित्सा में संलग्न हैं।

पं.लक्ष्मणरावजी ने हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया। किन्तु सरकार की ओर से सेनानियों को दी जानेवाली पेन्शन लेने से उन्होंने साफ इन्कार कर दिया। 'मैंने अपनी मातृभूमि की सेवा पैसों के लिए नहीं की है, फिर इसके बदले में निवृत्तिवेतन क्यों लूं? इसे मैं जीते जी स्वीकार नहीं करूंगा।' यह उनकी प्रबल प्रतिज्ञा थी। उनमें योग साधना की धून संवार थी। ६-६ घंटे पद्यासन लगाकर वे प्रभु का ध्यान करते थे। गुरुदेव बन्सीलालजी व्यास की प्रेरणा से गुरुकुल घटकेश्वर में आप गायत्री जप के लिए बैठें। तब बीच में ही व्यासजी का निधन हुआ, तब भी आपने साधना छोड़ी नहीं और गुरुकुल में ही रहे। वे प्रबल ईश्वर विश्वासी थे। वैदिक सिद्धान्तों के साथ उन्होंने कभी भी समझौता नहीं किया। गोमाता, भूमिमाता एवं जन्मदात्री माता के प्रति उनमें सर्वोपरि श्रद्धाभाव रहा। गऊ को बेचना वे महापाप समझते थे। कौपिन पहनकर व एक ही अनसिला वस्त्र ओढ़कर घूमते थे। पैर में चप्पल या जूता कभी भी नहीं पहनते थे। दिन में एक ही बार भोजन ग्रहण कर स्वाध्याय, योग, ध्यान व चिन्तन में संलग्न होना, यह उनके जीवन का अंग बन गया था। कभी-कभी तो ३-३ दिनों तक वे उपवास करते रहते। 'दुनिया क्या कहेगी?', इसकी परवाह न करते हुए एक

योगी की भांति अकेले ही साधनामार्ग के पथिक बनकर जीते रहे। जब कभी स्वास्थ्य बिगड़ गया, तो प्राकृतिक व आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति को अपनाते, किन्तु कभी भी उन्होंने औलोपेथी (विदेशी) दवाई ग्रहण नहीं की। सारे गाँव पर उनकी निराली धाक थी। लोग उन्हें आदरपूर्वक 'पिताजी' के नाम से सम्बोधित करते थे।

सादगीपूर्ण जीवन व्यतीत करनेवाले पूज्य पिताजी श्री लक्ष्मणरावजी सामाजिक कार्य से भी चुके नहीं। घर के पड़ोसी दलित परिवार की कन्या के विवाह में अपनी ओर से २५ कीलो की बूंदी देशी घी में बनवाकर बांट दी। इस तरह गरीब-अनार्यों की सहायता कर परोपकार धर्म भी आपने निभाया। श्री मारुतीराव सुरावार का वैदिक पद्धति से विवाह संस्कार करवाने में आप ही आग्रही रहे। अपने प्रिय शिष्य श्री हनमन्तू पुल्लागोर (जिनकी हाल ही में यातायात दुर्घटना में मृत्यु हुई) को आपने वैदिक विचारों के सुसंस्कार देकर आर्य समाजी बनाया। अपने गाँव का आर्य समाज वैदिक धर्म के प्रचार का केन्द्र बनें, यह उनकी तीव्र अभिलाषा थी।

पू.श्री पिताजी प्रखर राष्ट्रधर्मी थे। देश के नेता ईमानदार, निष्कलंक, देशभक्त तथा जनता का कल्याण करनेवाला हो, ऐसी उनकी अभिलाषा थी। वर्तमान दूषित राजनीति देखकर उनके मन में क्षोभ उत्पन्न

होता था। इसलिए चुनावों में अयोग्य उम्मीदवारों को देखकर उन्होंने कभी वोट ही नहीं दिया। श्रीमती इन्दिरा गान्धी के प्रधानमन्त्रीत्व काल में जब परिवार नियोजन(गर्भपात) कानून लागू किया गया, तब पू.पिताजी का खून खौल उठा। तब उन्होंने प्रधानमन्त्री गान्धी व राष्ट्रपति करुद्दीन अली अहमद को कठोर शब्दों में पत्र लिखकर इस कानून का कड़ा विरोध किया।

चाहे कोई भी क्यों न हो? यदि वह गलत काम करता हो, तब उसका वे सख्त विरोध करते। निष्पक्षभाव से सच्चाई का पक्ष लेना वे अपना परमधर्म समझते थे। इस अटल व अखण्ड सत्यनिष्ठा के कारण लोगों में उनका गहरा प्रभाव रहा। इसलिए सभी प्रकार के लोग उनका मार्गदर्शन व आशीर्वचन लेते। उनका यह कठोर व्यवहार कुछ लोगों को भले ही अटपटा सा लगता था, किन्तु ईश्वरीय सत्य व्यवस्था

में सदैव सोत्साह विचरनेवाले ऐसे योगियों को संसार से क्या लेना-देना? वे तो अपना जीवन महाराज भर्तृहरिजी के श्लोकानुसार चाहें कोई निन्दा करें या स्तुति, चाहे धनलक्ष्मी मिले या वापिस चली जाये, भले ही आज मृत्यु प्राप्त हो या दूसरे युग में! धैर्यवान योगी सज्जन तो सदैव सत्यथर चलते ही रहेंगे! “न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।”

ऐसे आर्य सिद्धान्तों के प्रबल समर्थक, साधक, योगी महात्मा को उनके पावन स्मृति दिवस(५ मार्च) पर श्रद्धावनत अभिवादन!

(यह लेख पू.पिताजी के पुत्र पं.मानवमित्रजी (गणेशदेव) आर्य, शिष्य स्व.हनमन्लू पुल्लागोर एवं गंगारेड्डी भूपतवार के परामर्श से मिली जानकारी के अनुसार लिखा गया है। इसमें कुछ त्रुटियां भी रह सकती हैं..।)

माता-पिता की स्मृति में प्रो.होलीकर द्वारा रंगीन मुखपृष्ठ



वैदिक गर्जना मासिक का रंगीन मुखपत्र पुनश्च एक बार म.आ.प्र. सभा के अंतरंग सदस्य, प्रसिद्ध भाषाविद् प्रो.ओमप्रकाशजी होलीकर-विद्यालंकार की ओर से अपनी दिवंगत माताजी श्रीमती रुक्मिणीदेवी वासुदेवरावजी होलीकर तथा पिता



स्वा.सै.स्व.वासुदेवरावजी हनुमंतराव होलीकर की पावन स्मृति में बनाया जा रहा है। इसके लिए श्री होलीकरजी एवं उनके परिवार ने सभा को रु.१०,०००/- का आर्थिक सहयोग दिया है। एतदर्थ सभा होलीकर परिवार का धन्यवाद व्यक्त करती है...। इससे पूर्व भी उन्होंने रंगीन मुखपृष्ठ दिया था।

आर्यसमाजद्वारा प्रधानमंत्री मोदी का स्वागत

प्रधानमंत्री श्री नरेद्र मोदीजी कर्नाटक के बीदर एवं गुलबर्गा शहर में कार्यक्रम हेतु पधारे थे। तब आर्य समाज द्वारा उनका बीदर के हवाई अड्डे पर स्वागत एवं अभिनन्दन किया गया। कर्नाटक सभा के प्रधान श्री सुभाषजी अष्टिकर ने आर्यजनों की ओर से यह सम्मान किया गया। प्रधानमंत्री की मुलाकात में श्री अष्टिकरजी ने 'तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्तात्....।' इस

मंत्र का पाठ करते हुए श्री मोदीजी को बधाई दी। तब श्री मोदीजी द्वारा पूछे जाने पर श्री अष्टिकर ने इस मन्त्र का अर्थ बताया और उनके दीर्घायु की कामना की। यह जानकर मोदीजी ने हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की और आर्य समाज को शुभकामनाएं प्रदान की। इस अवसर पर आर्य समाज के अन्य कार्यकर्ता भी उपस्थित थे।

करकम्ब में मनाया गया 'दयानन्द जन्मोत्सव'

सोलापुर (महाराष्ट्र) जिले के करकम्ब (ता.पंढरपुर) गांव में डी.ए.वी. शिक्षा संस्थान द्वारा महात्मा आनन्द स्वामी कनिष्ठ महाविद्यालय एवं रामभाऊ जोशी हायस्कूल ये दो संस्थाएं चलती हैं। इन दोनों विद्यालय शैक्षणिक उपक्रमों के साथ ही छात्रोन्नति हेतु प्रेरणादायी उपक्रमों का भी आयोजन होता है। यहां पर प्रतिवर्ष महर्षि दयानन्द का जन्मोत्सव हर्षोल्लासपूर्वक मनाया जाता है। इस वर्ष भी यह समारोह विभिन्न कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में जिलास्तरीय चित्र रंगभरण व वक्तृत्व स्पर्धा के साथ ही वैदिक अग्निहोत्र, भव्य शोभायात्रा आदि कार्यक्रम भी लिये गये।

दोनों प्रतियोगिताओं में अनेकों छात्रों ने सहभाग लिया। महर्षि दयानन्द के जीवनचरित्रपर बच्चों ने प्रेरणादायी विचार प्रस्तुत किये गये। अग्निहोत्र (यज्ञ) के पश्चात् गांव में भव्य रूप में शोभायात्रा निकाली गयी, जिसमें एक रथ में महर्षि दयानन्द की प्रतिमा स्थापित की गयी थी। साथ ही बच्चों व अध्यापकों ने भी 'महर्षि दयानन्द की जय' के नारे लगाते व गीत गाते हुए इस शोभायात्रा में भाग लिया। स्कूल के मुख्याध्यापक श्री हेमन्त कदम व अध्यापकों ने इसकी व्यवस्था का पूरा भार उठाया। वैदिक यज्ञ का पौरोहित्य सोलापुर के आर्ययुवक पं.श्री वेदसुमन आर्य (भोसले) ने किया।

लातूर का वार्षिकोत्सव २७, २८, २९ मार्च को

लातूर की पुरानी प्रसिद्ध आर्य समाज, गांधी चौक का वार्षिकोत्सव दि. २७, २८, २९ मार्च २०१९ को मनाया जा रहा है। इस अवसर पर प्रमुख व्याख्याता के रूप में जयपूर (राजस्थान) से आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान स्वामी सच्चिदानन्दजी सरस्वती (आचार्य पं. हरिप्रसादजी शास्त्री) पधार रहे हैं तथा भजनोपदेशक के रूप में मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) से पं. सन्दीपजी वैदिक आ रहे हैं। तीनों दिन प्रातः ८.०० से १०.३० बजे तक यज्ञ, भजन, प्रवचन तथा दोपहर

शंकासमाधान एवं रात्रि में ८ से १०.३० बजे तक भजन एवं व्याख्यान कार्यक्रम होंगे। बाहर से पधारनेवाले श्रोताओं की भोजन व निवास की व्यवस्था संयोजकों की ओर से की गयी है।

अंतः इस समारोह में अधिक से अधिक से संख्या में आर्यजनों को पधारने का आवाहन आर्य समाज गान्धी चौक के प्रधान श्री ओमप्रकाशजी पाराशर, मंत्री श्री चन्द्रभानुजी परांडेकर एवं अन्य पदाधिकारियों ने किया है।

गुजरात में विज्ञानमुनिजी का सम्मान

आर्य समाज, परली-वै. द्वारा संचालित आर्य वानप्रस्थाश्रम के वैद्य श्री विज्ञानमुनिजी एवं आर्य कार्यकर्ता श्री गोवर्धनजी चाटे रोजड में आयोजित 'वैदिक ध्यान प्रशिक्षण शिविर' में सम्मिलित होने हेतु हाल ही में गुजरात पहुंचे थे। इस शिविर में भाग लेकर उन्होंने ईश्वर, आत्मचिंतन, योगसाधना आदि का प्रशिक्षण पाया। इसी दौरान श्री प्रभुलालजी गोहील

(आर्य) के निवेदन पर श्री मुनिजी दि. १५ डिसेंबर १९ को रोजड के समीपस्थ आर्य समाज कांकरिया पहुंचे। श्री मुनिजी के सेवाभावी कार्यों के देखते हुए आर्य समाज द्वारा उनका सम्मान किया गया। उन्हें रु. ११००/- राशि, शॉल, पुष्पहार प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर स्वामी विवेकानन्दजी परिव्राजक तथा आर्य समाज के पदाधिकारी भी उपस्थित थे।

- वैदिक गर्जना सूचना -

वैदिक मानवतेचे तत्त्वज्ञान व विचार आणि आर्य समाजाचे विविध कार्यक्रम जाणून घेण्याकरिता सूझ वाचकांनी रु. १००० सभेकडे पाठवून 'वैदिक गर्जना' या मासिकाचे आजीवन सदस्य व्हावे. तसेच ज्या ग्राहकांना हे मासिक मिळत नसेल त्यांनी सभाव्यवस्थापक श्री रंगनाथ तिवार (मो. ९४२३४७२७९२) यांचेशी संपर्क करावा.
एस.बी.आय.परळी खाते क्र. 11154152843 IFSC Code-SBIN0003406

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

श्रेष्ठ मानव बनों ! वेदों की ओर लौटो !

वेद प्रतिपादित मानवीय

जीवन मूल्यों को

जन-जन तक पहुँचाने हेतु

गौरवपूर्ण सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एच. 333/र.बं.६/टी.ड. (७)१६७/१०४९,

स्थापना ५ मार्च १९७७)



मानव कल्याणकारी उपक्रम

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव- 'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि)
- महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान - विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

माझा मराठाची बोलु कवतिके । परि अमृतातेही पैजेसीं जीके ।

ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ॥ (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

उपनिषद संदेश धाडसी व घाबरणाऱ्यामध्ये फरक

पराचः कामाननुयन्ति बालास्ते मृत्योर्यन्ति विततस्य पाशम्।

अथ धीरा अमृतत्वं विदित्वा ध्रुवमध्रुवेष्विह न प्रार्थयन्ते॥

(कठोपनिषद्-४/२)

अर्थ- जे अज्ञानी लोक बाह्य विषयांच्या इच्छा-आकांक्षेमागे धावतात, ते अज्ञानी पुरुष समग्र प्राणीजगतांमध्ये मोठ्या प्रमाणात पसरलेल्या दुःखाच्या जन्म-मृत्यु रुपी बंधनाला प्राप्त होतात आणि जे विवेकशील ज्ञानी पुरुष असतात, ते नित्य व दुःखरहित अशा मोक्षसुखाला जाणून या जगामध्ये अनित्य पदार्थांच्या अशाश्वत व नश्वर सुखांची इच्छा करीत नाहीत.

दयानंद वाणी स्त्रियांना वेदाधिकार आहे

स्त्रियांनीही वेदांचे पठण अवश्य करावे. पहा - श्रौतसूत्रादीमध्ये 'इमं मन्त्रं पत्नी पठेत्।' म्हणजे यज्ञामध्ये पत्नीने हा मंत्र म्हणावा, असे म्हटले आहे. जर स्त्रीने वेदादी शास्त्रांचा अभ्यास केलेला नसेल तर तिला यज्ञामध्ये स्वरसहित मंत्रांचे उच्चारण व संस्कृत भाषण कसे करता येईल? भारतवर्षामध्ये स्त्रियांना भूषणास्पद ठरलेल्या गार्गी वगैरे महिला वेदादी शास्त्रांचे अध्ययन करून पूर्ण विदुषी बनल्या होत्या, असे शतपथ ब्राह्मणात स्पष्ट सांगितले आहे. शिवाय पुरुष विद्वान् आणि स्त्री अडाणी किंवा स्त्री विदुषी व पुरुष अडाणी अशी स्थिती असेल तर उठल्यासुटल्या घरात देवासुर संग्राम माजून राहील, मग सुख कोठले? तसेच स्त्रिया शिकल्या नाही, तर मुलींच्या शाळांमध्ये शिक्षिका कोठून मिळणार? राज्यव्यवस्था, न्यायाधीशत्व वगैरे कामे करण्याचे शिक्षण पुरुषांनी घेतले पाहिजे. गृहस्थाश्रमामध्ये पतीने पत्नीला व पत्नीने पतीला प्रसन्न ठेवले तरच सर्व कामे व्यवस्थित पार पडतात. घरातील सर्व कामांची जबाबदारी स्त्रीवर असते. ती स्त्री सुशिक्षित नसेल तर घरची कामे व्यवस्थित होऊ शकत नाहीत.

(सत्यार्थप्रकाश तिसरा समुल्लास)

.... आणि दयानंद जागे झाले !

- रमेश ठाकूर(निवृत्त मु.अ.)

महाशिवरात्री! शैव मतावलंबीयांचा एक महापर्व.... साऱ्या त्रैलोक्याला आपल्या तांडवनृत्याने भयकंपित करून सोडणाऱ्या भगवान शंकराच्या विवाह-रात्रीचा दिवस! काही युगांपूर्वी, याच तिथीस भगवान शंकराचा विवाह झाला होता. तेंव्हापासून हिन्दू-धर्मास मानणारे या महान पर्वस मोठ्या धूमधडाक्यात अगदी श्रद्धा-भक्तीने मानत व साजरे करीत आले आहेत. आजही शिवरात्रीचा पवित्र पर्व होता. मोरवी राज्यातील (काठियावाड) टंकारा गावात सर्व भक्तजन पूर्ण श्रद्धा-भक्तीने हा महान पर्व साजरा करण्याच्या तयारीस लागले होते.

शैवपंथियांनी दिवसभर व्रत केले होते. करसनजी यांच्या घरीही पुरेशी तयारी चालू होती. त्या गावातील करसनजी हे एक धनाढ्य ब्राह्मण होते. या पर्वति व्रत पालनात हे कुटुंबही सहभागी होत असे व यानिमित्ताने खुल्या हाताने दानधर्मही करीत असत. चौदा वर्षांचा बालक मूलशंकर जेंव्हा झोपेतून जागा झाला आणि पाहिले. आई कांही विशेष तयारी करण्यात मग्न झाली आहे. जेंव्हा कांही

विशेष पर्व(सण) वा उत्सव होणार आहे, तेंव्हा अशा प्रकारचे आयोजन होत असे. बालक मूलशंकर कांही वेळ पाहातच राहिला. समजून घेण्याचा प्रयत्न करू लागला, पण त्यास काही अर्थ बोधच होईना. यामुळे तो आपल्या आईजवळ आला आणि तिलाच विचारले, “आई! कांही विशेष समारंभ आहे का?” आईने मायेने मूलशंकरास जवळ ओढले, डोक्यावरून प्रीतीपूर्वक हात फिरवित म्हणाली, “हो बेटा! आज आपले आराध्य दैवत भगवान शंकराची विशेष आराधना केली जाते. आज महाशिवरात्री आहे ना!”

मूलशंकराने हे ऐकून आनंदाने आईच्या कमरेस मिठी मारली व म्हणाला, “महाशिवरात्री...! आजच्या दिवशी मी देखील दिवसभर उपवास करणार आहे. मी पण व्रत पालन करीत रात्री देखील भगवान शंकराच्या आराधनेसाठी देवालयात जाणार आहे. मी असे ऐकले आहे की, तो आपण जे मागू ते तो देतो.”

“होय बेटा, असेच होते. आज जो शुद्ध व पवित्र मनाने व्रत पालन करीत शंकराची आराधना करतो, त्यावर प्रसन्न होऊन भगवान शंकर त्यास मागेले ते फळ

देतात.” आईच्या या बोलण्यात अगाध ममता, वात्सल्य ओसंडत होते. तेंव्हा मूलशंकर म्हणाला, “असे असेल तर आई! मी देखील हे व्रत घेतो. मंदिरात उपासना करण्यासाठीही जातो...” मूलशंकरचे आई-वडील शिस्तीचे भोक्ते होते. ते कर्मठ होते आणि कठोरपण होते. आपल्या मुलावर त्यांनी धार्मिक संस्कार अतिशय कर्तव्यभावनेने केले होते. त्यांच्या शिक्षणाची त्यांनी काळजी घेतली होती. शिक्षण पारंपारिक पद्धतीने दिले होते. मूलशंकरने वयाच्या अवघ्या चौदाव्या वर्षीच यजुर्वेद पूर्ण कंठस्थ केले होते. या मूलशंकरने आईस सांगितल्याप्रमाणे, शिवदर्शनाची प्रचंड उत्सुकता असल्याने तो आपल्या वडिलांबरोबर महाशिवरात्रीच्या दिवशी रात्री गावापासून काही अंतरावर असलेल्या शिवमंदिरात गेला. रात्रभर जागरण करणे भाग होते. महादेवाच्या पिंडीभोवती शिवभक्त बसले होते. ते सर्व मध्यरात्रीनंतर पेंगू लागले. मूलशंकर मात्र जागा होता. शिवदर्शनासाठी तो अतिशय उत्सुक होता. महादेवाच्या पिंडीवर त्याने लक्ष केंद्रित केले होते. मध्यरात्र झालेली! सर्वत्र निरव शांतता... कोणीही जागा नको...! एकटा मूलशंकर मात्र एकटक पिंडीकडे पाहत बसलेला! समोर पाहतात तो काय! नैवेद्य खाण्यासाठी महादेवाच्या पिंडीवर उंदीर चढला. जगाचे रक्षण

करणाऱ्या शिवाच्या पिंडीवर उंदीर! उंदरापासून जो स्वतःचे रक्षण करू शकत नाही तो परमेश्वर जगाचे रक्षण ते काय करणार ? मूलशंकराच्या मनात विचारांचे काहूर उठले. त्याने पेंगत असलेल्या आपल्या वडिलांना उठवले. त्यांच्यावर प्रश्नांचा भडिमार केला. वडील त्याचे समाधान करू शकले नाहीत. उलट त्याच्यावरच ते रागावले.

मूलशंकर अतिशय अस्वस्थ झाला. कांही दिवसांनी त्याचे चुलते वारले. सख्खी बहीण वारली. या सततच्या घटनांनी मूलशंकराचे जीवनच पार बदलून गेले. मनात विरक्ती निर्माण झाली. इथेच मूलशंकराच्या जीवनाला कलाटणी मिळाली. मूलशंकरची अस्वस्थता व बेचैनी सगळ्यांचाच लक्षात येत होती. एकेदिवशी मूलशंकराच्या मनाने उचल खाल्ली; त्याने रात्रीची सामसूम लक्षात घेऊन केवळ अंगावरच्या कपड्यानिशी घरातून पोबारा केला. नंतर तो कधीच परतला नाही. सत्यज्ञानाच्या शोधात अनवाणी पायांनी अनेक वर्षे भटकत राहिला. अनेक साधू-पुरुषांच्या भेटी घेतल्या. मनातल्या शंका विचारल्या, पण समाधान झाले नाही.

सत्यज्ञानासाठी मूलशंकरने घरदार सोडले. सर्वस्वाचा त्याग केला. गौतम बुद्धाने अशाच प्रकारे याच कारणासाठी

सर्व प्रकारच्या सुखांना लाथाडून आपला राजवाडा सोडला होता. या दोन्ही महापुरुषांमध्ये विलक्षण साम्य आढळते.

या तरुणाने खूप भटकंती केली. सत्यज्ञान प्राप्त करण्यासाठी त्याने चारी दिशा धुंडाळल्या. योग्य गुरूंचा शोध घेतला. अनेक योगी व संन्यास्यांच्या भेटी घेतल्या. पूर्णानंद सरस्वती या महाराष्ट्रीय संन्याशाकडून त्याने संन्यास दीक्षा घेतली आणि अशा ह्या विलक्षण घटनांनी ब्रह्मचारी मूलशंकर 'स्वामी दयानंद सरस्वती' बनला. अनेक साधू-संतांच्या भेटी घेतल्या, चर्चा केल्या, पण समाधान झाले नाही. शेवटी मथूरेला स्वामी विरजानंदांची भेट झाली. एकदाचा योग्य गुरु भेटला आणि आजच्या आमच्या कथेचा नायक युगप्रवर्तक, महान समाजसुधारक, शास्त्रार्थ महारथी, खरा सत्यान्वेषी....., वेदोद्धारक, महिलांनाही पुरुषांइतकाच ज्ञानप्राप्तीचा हक्क मिळवून देणारा स्त्री उद्धारक..., उच्चनीचतेचा अर्धांगवायू झालेल्या समाज पुरुषांस दलितोद्धाराने संजीवनी देणारा स्वामी दयानंद अस्तित्वात आला.

स्वामी दयानंदांची ज्ञानलालसा प्रचंड होती. भौतिक जीवनातील सर्व आसक्तींचा त्यांनी त्याग केला होता. ज्ञानाची आसक्ती मात्र त्यांनी वाढविली होती. स्वामी विरजानंदांच्या रूपाने त्यांना

खरा योगी भेटला होता. स्वामी विरजानंदांनी स्वामी दयानंद सरस्वतींना अभ्यासलेले सर्व अनार्ष ग्रंथ यमुनेत बुडवायला सांगितले. जे शिकले होते, ते विसरणे भाग होते. जे उपयुक्त नाही ते विसरणे हा देखील शिक्षणाचाच भाग आहे. 'For proper remembering there should be forgetting, forgetting is also essential.' स्वामी दयानंदांनी स्वामी विरजानंदांच्या चरणी बसून आर्ष ग्रंथांचा सखोल अभ्यास सुरु केला. तेव्हा ते छत्तीस वर्षांचे होते. संस्कृत भाषेवर त्यांनी अप्रतिम प्रभुत्व मिळविले. संस्कृत भाषेच्या व्याकरणाचा त्यांनी चिकित्सक पद्धतीने सखोल अभ्यास केला. अडीच वर्षांनंतर स्वामी दयानंद सरस्वतींनी आपल्या गुरूंचा निरोप घेतला. गुरूविषयी प्रचंड कृतज्ञता घेऊन लोकांना सत्य ज्ञानाचा प्रकाश देणे व देशाच्या स्वातंत्र्यासाठी प्रयत्न करणे यासाठीच पुढील कालावधीत काम करण्याची गुरुदक्षिणा देऊन दयानंद बाहेर पडले. 'वेदज्ञान' हेच सत्यज्ञान आहे व त्याच्या प्रचार-प्रसाराचा व विद्वानांबरोबर शास्त्रार्थ करण्याचा संकल्प घेऊन आयुष्यभर त्याचे पालन केले. आपल्या गुरूंचा उपदेश आचरणात आणण्यासाठी सातत्याने प्रयत्न केला. सुदैवाने त्यांना आद्य शंकराचार्याची बुद्धिमत्ता व गौतमबुद्धाची करूणा लाभली होती. त्यांची स्मरणशक्ती अद्भुत होती. चेहऱ्यावर आगळे वेगळे तेज, संस्कृत भाषेवर प्रभुत्व

मधुरवाणी, अमोघ वक्तृत्व यांचा त्रिवेणी संगमच स्वामी दयानंदांमध्ये होता.

स्वामी दयानंदांनी मूर्तिपूजेचे खंडन केले. कुंभमेळ्यात पाखंड खंडिनी पताका फडकावली. त्यांनी मुख्यतः दोन प्रश्नांना समोर ठेवले- 'मूर्तिपूजा आणि जातिप्रथा!'. त्यांची त्यांनी तर्ककठोर चिकित्सा केली. निखळ सत्य हे वेदातच आहे. त्या ग्रंथात कोठेही मूर्तिपूजेचे समर्थन केलेले नाही व जातिप्रथेचेही समर्थन केल्याचे कोठेही आढळत नाही. स्वार्थी लोकांनी ती प्रक्षिप्त केली. पंडित पुरोहितांनी लोकांच्या अज्ञानाचा फायदा घेतला. स्वामी दयानंदांनी हे सत्य जगासमोर मांडले. यासाठीच 'सत्यार्थ प्रकाश' ची निर्मिती केली. सत्य बोलणे व सांगणे हाच असत्यावरचा प्रहार असतो. सत्य व असत्य या तलवारी एकाच म्यानात एकत्रित नांदू शकत नाहीत. सत्याचा प्रकाश लोकांच्या दारापर्यंत घेऊन जाणे हेच स्वामी दयानंदांचे मिशन बनले. आपले सर्व आयुष्य त्यांनी सत्याला अर्पिले होते. सत्याच्या शोधार्थ त्यांनी आपली प्रज्ञा पणाला लावली. या देशात अनेक देव-देवतांची मंदिरे, तीर्थक्षेत्रे, तेहतीस कोटी देव-देवतांचा हा देश? अनिष्ट प्रथा-परंपरांचे जाळे देशभर पसरलेले आजही आहे. यात हिंदू समाज अडकलेला होता, आजही आहे. जातिप्रथेने समाजाला जणू कांही विषारी सापाप्रमाणे विळखाच

घातलेला होता. हजारो जाती व पोटजातीत देश विभागला गेलेला. यामुळे प्रचंड प्रमाणात विघटन झाले होते. जातिव्यवस्थेला जन्माधिष्ठित करून ठेवण्यात आले होते. अस्पृश्यतेने तर अमानुषी रूप धारण केले होते. बालविवाहच व्हायचे! विधवांना विद्रुप करणे, विधवांना पुनर्विवाह करू न देत. सतीप्रथा आदींचे प्रस्थ माजले होते. या सर्व बाबी 'पूर्वजन्मीच्या पापामुळेच!' हा समज समाजमनात दृढ केला गेला होता. केवळ दैवावर विश्वास ठेवला जात होता. स्वामी दयानंदासमोर असे हे देशाचे व समाजाचे विदीर्ण झालेले रूप होते. असा हा दुबळा भारत पाहून त्याला फोडून सर्व वंचितांना आधार निर्माण करणे हे खरे आव्हान स्वामीजींसमोर होते. राजे-रजवाडे इंग्रजांचे गुलाम होते. स्वाभिमानशून्य जीवन ते जगत होते. स्वदेश व स्वराज्य! या संकल्पनांनी आकारच घेतला नव्हता.

हे चित्र कसे बदलता येईल? हा बदल कोण करणार ? ह्या सर्व प्रश्नांनी स्वामी दयानंदांना अस्वस्थ केले होते. अनिष्ट प्रथा, परंपरा, अंधश्रद्धा, अज्ञान, जातिभेद, मूर्तिपूजा, जरठ विवाह, बालविवाह, दैववाद, अवतारवाद अशा अनेकविध फांद्या असलेल्या वृक्षास कसे संपवायचे? त्याच्या फांद्यावर घाव घालावा की मूळावर? मूळावर घालणे हाच यावर

उपाय होता. स्वामीजींनी हे अवघड काम हाती घेतले. या आव्हानाला समर्थपणे सामोरे जाण्याचा निर्धार केला तोही एकट्यानेच! घाव घालायला सुरुवात केली एकट्याच्या बळावर...!

महर्षी स्वामी दयानंदांनी हिंदू समाजाच्या पूर्णरचनेचे कार्य हाती घेतले. खरे तर हे खूपच जटील कार्य! पण त्यांनी आत्मविश्वासाने ते हाती घेतले. जन्मलेल्या प्रत्येकास ज्ञानाचा, उपनयनाचा, द्विज बनण्याचा अधिकार आहे, हे निक्षुण सांगितले. त्यात मुलगा-मुलगी असा भेद करण्याचे कारण नाही. तो कुठल्या जातीत वा जमातीत जन्माला आला आहे ? हे पाहण्याचे कारणच नाही. स्वामीजींची भूमिका स्पष्ट, स्वच्छ व प्रांजळ होती. बालकांना शिक्षणाची समान संधी देणे, त्यांना मोफत व सक्तीचे शिक्षण देणे, तशी व्यवस्था करणे याचे समर्थन केले. मुलांच्या कुवतीनुसार, क्षमतेनुसार व योग्यतेनुसार शिक्षण मिळावे. स्त्री-पुरुषाला बरोबरीने स्थान दिले. सगळ्यांनाच वेदाचा अधिकार आहे. कोणाच्याही स्पर्शाने वेद अपवित्र होत नाहीत. वेद म्हणजेच विद्या, ज्ञान...! जन्मतःच कोणीही ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य वा शूद्र नसतो, तो कर्मानुसार ठरत असतो.

स्वामी दयानंदांनी या सर्वांसाठी लढा दिला. याची व्याप्ती वाढावी म्हणून 'आर्य

समाजा' ची स्थापना केली. पर्यायाने या सर्व आव्हानांना सांघिक तोंड द्यावे व खऱ्या अर्थाने समाजात जागृती आणावी, अशी कल्पना आजपर्यंत आर्य समाज या संस्थेने १४४ वर्ष पूर्ण केली. आम्ही मोठे उत्सव संपन्न करतो, पण वैचारिक लढा आम्हाला उभारता येईना. स्वामी दयानंदांनी सुरु केलेला सत्याचा, ज्ञानाचा, मानवतेचा, वैज्ञानिक विचारधारेचा लढा अधिक गतिमान करण्यात आपण (अर्थात् आर्य समाजी) कुठेतरी कमी पडतो आहोत. याच मुख्य कारण 'स्वतः केले मग सांगितले' हे होत नाही. यासाठी खरे तर प्रत्येकांना आत्मपरिक्षण करण्याची गरज आहे, यात पुढील प्रश्न आपणच आपल्याला विचारावयाचे आहेत आणि संकल्प करावयाचे आहेत. हे असे -

* 'ईशावास्यमिदं सर्वं ...' हा ईशोपनिषदातील पहिला मंत्र व त्याचा अर्थ खराच आमच्या लक्षात आलेला आहे का ?

* मानव सारे एक, विज्ञानालाही हेच मान्य आहे. तो कोणत्याही देशातील असो, तो Homo-sepians याच नावाने ओळखला जातो. त्यात पुरुष व स्त्री ह्या दोनच जाती. वेदालाही हेच मान्य आहे. हे आम्ही किती पचविले आहे ?

* प्रातः सायं संध्या करावी, यात आत्मचिंतन करावे ? असे अपेक्षित आहे.

हे आम्ही कितपत करतो ?

* 'आर्य समाज' म्हणजे 'संध्या-हवन कंपनी लि.' आहे असे म्हटले जाते. खरेच आम्ही एवढ्यापुरतेच आर्य समाजी आहोत काय ?

* 'आर्य समाज' या संस्थेस दीडशे वर्ष होत आलेली आहेत. यात खरेच आम्ही यज्ञाचे वैज्ञानिक स्वरूप लोकांसमोर ठेवण्यात यशस्वी झालो आहोत का ?

* जीवधेणा जातीयवाद, अंधश्रद्धा या विरुद्ध लढा देण्यासाठी आम्ही आमची कंबर कसली आहे का ?

* वैदिक तत्त्वज्ञात नीतिमूल्यांची जपणूक करण्यासाठी आहे. ही नीतिमूल्ये रूजविण्यासाठी कोणता कार्यक्रम आम्ही आमच्या हाती घेतला आहे ?

* यज्ञोपवीत हे महत्त्वाच्या तीन व्रतांचे पालन करण्यासाठी धारण करावयाचे आहे. यात जन्मदात्या मातापित्यांना खरेच आमचे देव मानतो का ? त्यांच्या देखभालीची आम्ही खरेच काळजी करतो का ? कुटुंबसंस्था यासाठीच आहे. ती आम्ही

खऱ्या अर्थाने किती टिकविली ?

* पीडितांच्या मदतीला धावून जाण्यासाठी आर्य समाज आहे. यास आम्ही किती साथ देतो ?

* आर्य समाजाचे दहा नियम आहेत. त्यात 'सत्याचे ग्रहण करण्यास व असत्याचा त्याग करण्यास आम्ही सदैव तयार असावे', वैज्ञानिक दृष्टिकोन देखील हाच आहे. तो आम्ही खराच स्वीकारला काय ?

महाशिवरात्री या उत्सवाने स्वामी दयानंदांना ज्ञानाची दृष्टी दिली व तिचा उपयोग करण्याचा संकल्प त्यांनी केला. म्हणूनच ही महाशिवरात्र आम्हाला 'सत्याचा संकल्प करण्याचे!' आवाहन करित आहे. म.दयानंदांनी केलेल्या वैदिक तत्त्वज्ञानाच्या प्रचार व प्रसाराचा संकल्प करण्याकरीता ही बोधरात्र आम्हास प्रेरणा देत आहे. याकरिता ईश्वर आम्हास बळ व सामर्थ्य प्रदान करो, हीच प्रार्थना....!

- 'यज्ञ' हौसिंग सोसायटी, गारखेडा परिसर, औरंगाबाद मो. ९४२३१७८८०३

आर्य समाज धर्माबाद तर्फे शाळांमध्ये कार्यक्रम

धर्माबाद येथील आर्य समाजाच्या वतीने दरवर्षी स्वतंत्र्यदिन व प्रजासत्ताक दिनाचे औचित्य राखून परिसरातील विविध शाळांमध्ये विद्यार्थ्यांना राष्ट्रीय एकात्मता, मानवता सुसंस्कार, व्यसनमुक्ती, मातृपितृ सेवा इ. विषयावर प्रबोधन दिले जाते. याही वर्षी प्रजासत्ताक दिनी धर्माबाद येथून जवळच असलेल्या रामपुर जि.प. शाळेत कार्यक्रम घेतला. पुरोहित पं. अनिलजी आर्य यांनी विद्यार्थ्यांना मोलाचे मार्गदर्शन केले. शेवटी 'सत्यार्थ प्रकाश', म.दयानंद प्रतिमा शाळेस भेट दिली. यावेळी आर्य कार्यकर्ते श्री राम मोतेवार, सुरेश गंजेवार इत्यादी उपस्थित होते.

जातपात निर्मूलनाच्या कार्यात राऊत कुटुंबाचे योगदान स्व.सौ.केशरबाईच्या स्मरणार्थ सभेत स्थिरनिधी

वेदांचे
मानवकल्याणकारी
तत्त्वज्ञान सर्वसामान्य
लोकांपर्यंत पोहोचावे व
मानवनिर्मित मत-पंथ व
जातिप्रथेचे निवारण



व्हावे, या उद्देशाने लातूरचे कृतिशील आर्य
समाजी व्यक्तिमत्त्व श्री किशनरावजी राऊत
बोरगांवकर व त्यांच्या कुटुंबियांनी
स्व.सौ.केशरबाई राऊत यांच्या स्मरणार्थ
महाराष्ट्र सभेत रु.५१०००/- (एकावन्न
हजार रु.)चा स्थिरनिधी स्थापन करून
समाजासमोर आदर्श उभारला आहे. या
स्थिरनिधीच्या व्याजराशीने जातीपातीच्या
निवारणाकरिता लघुग्रंथ (ट्रॅक्ट) किंवा
माहितीपत्रकांचे प्रकाशन केले जाईल.

राऊत दांपत्याचे प्रेरक जीवन -

लातूर तालुक्यातील बोरगाव धनेश्वरी
हे किशनरावांचे गाव. तेथे शिक्षणाची सोय
नसल्यामुळे इटकूर व वाशी येथे प्राथमिक
शिक्षण संपवून माध्यमिक शिक्षणासाठी ते
कळंबला आले. तेथील आर्य समाज
क्रियाशील असल्याने श्री किशनराव व त्यांचे
वर्गमित्र आत्माराम गुंजाळ हे विद्वानांची
प्रवचने ऐकण्याकरिता तेथे जाऊ लागले.
तेव्हापासून आजतागांयत हे दोघेही मित्र
आर्य विचारांचे कट्टर अनुयायी आहेत.

शालेय जीवनातच
लेखनकलेचा विकासही
झाला. पुढील उच्च
शिक्षण उस्मानाबादला
झाल्यानंतर पाटबंधारे
खात्यात नोकरी मिळाली.

तेर, भुसावळ,

अंबाजोगाई येथे नोकरी करतांना त्या-त्या
आर्यसमाजांशी संपर्कही वाढत गेला आणि
आर्य सत्य सिद्धांताशी घट्ट नाळ जुळत
गेली. मानवाच्या क्षुद्रबुद्धीतून उदय
पावलेल्या जातीपातीच्या अनिष्ट
चालीरीतीविरुद्ध त्यांचे मन पेटून उठले.
आणि जात-पात तोडून विवाह करण्याचा
निश्चय केला. या चळवळीत पू.श्री
उत्तममुनिजी हे फार अग्रेसर होते. त्यांच्याच
प्रेरणेतून सन १९६७ साली उदगीरचे झुंजार
आर्य समाजी श्री मल्लाप्पा सरसंबे यांच्या
कन्या केशरबाईशी किशनरावांचा
आंतरजातीय विवाह झाला. याच दांपत्याने
पुढे चालून आर्य समाजाच्या आंतरजातीय
विवाह चळवळीला वाहून घेतले. आपल्या
दोन्ही मुलांचे, मुलींचे व पुतण्याचे विवाह
ही असेच जात-पात तोडून घडवून आणले.
सेवानिवृत्तीनंतर श्री किशनराव हे लातूरलाच
स्थायिक झाले आणि महाराष्ट्र आर्य
प्रतिनिधी सभेअंतर्गत 'जात-पात निर्मूलन

मंडळ' चालवू लागले. या कामात सौ.केशरबाईनी जी मोलाची साथ दिली, तिला खरोखरच तोड नाही. घरी येणाऱ्या-जाणाऱ्या विद्वानमंडळी व विवाहेच्छुक मुलां-मुलींच्या आदरा तिथ्यामध्ये केशरबाईचा सदैव राबता हात राहिला आहे. दुदैवाने अलीकडे तीन-चार वर्षांपासून त्यांना असाध्य रोगाने ग्रासले... प्रकृती खालावत गेली. आजारादरम्यान पत्नीव्रत धर्माचे पालन करित श्री किशनरावजी त्यांची अत्यंत मनोभावे सेवा केली. पण ईश्वरीय व्यवस्थेमुळे कोणाचे कांही चालत नाही. शेवटी दि.२२ एप्रिल २०१७ रोजी

केशरबाईनी जगाचा निरोप घेतला.

सौ.केशरबाईनी ज्या जातपातविरोधी विचारांच्या पुरस्कर्त्या होत्या, तेच विचार व कार्य नव्या पिढीमध्ये प्रसृत होत राहावेत, याकरिता श्री किशनराव राऊत यांनी आपल्या दिवंगत धर्मपत्नीच्या स्मरणार्थ महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेत रु.५१ हजारांचा स्थायी फंड स्थापन केला आहे. याद्वारे लघुपुस्तके प्रकाशित होऊन नव्या पिढीमध्ये मनुष्यकृत जात-पात नाहीशी करण्यास प्रेरणा मिळेल. या कार्यास्तव श्री राऊत यांचे आर्यसमाजातर्फे अभिनंदन व दिवंगत सौ.केशरबाई यांना विनम्र श्रद्धांजली!

सभेत स्थापित स्व.(सौ.)केशरबाई राऊत स्मृति स्थिर निधी ची झेरोक्स प्रत

CARE NO WITHDRAWAL ONLY RENEWAL

यह अनक्रय्य लिखत नहीं है
This is not a Negotiable Document

भारतीय स्टेट बैंक STATE BANK OF INDIA

बचत जमा सूचन
TERM DEPOSIT ADVICE
(संश्लिष्ट जमा रसीद के तबज में)
(In lieu of Term Deposit Receipt)

नॉमिनेशन / Nomination : पंजीकृत / Registered / अपंजीकृत / Not Registered
दिनांक / Date :

प्रिय महोदय / महोदया, Dear Sir/Madam,
हम यह सुनिश्चित करने का प्रयास कर रहे हैं कि आपको निम्नलिखित राशि हमारे पास जमा है। अधिकृत से, कृपया आपके पत्राचार में खाता क्रमांक को सही ढंग से उल्लेख करें। हमारे साथ संबंध रखने के लिए धन्यवाद। We have pleasure in confirming details of the following amount held in deposit with us. Please quote the account number in all correspondence. Thank you for Banking with us.

नाम / Name : महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभाग, ए.सी. कोटर केशरबाई, पैन सख्ता / PAN NO. Brgomkar (Pant) Lokur smati smark dnuv shikhi vaidic sahiti prashna

संकेत संख्या / CIF No. : केशरबाई
पैन संख्या / PAN NO. : KESHBABAI

व्यवस्थापन की विधि / Mode of Operation : योजना / Scheme :

खाता क्रमांक / A/c No.	बचत / Term	व्याज दर / Interest @	मूल राशि / Principal Amt	जारी करने की तारीख / Value Date	परिपक्वता / Maturity Date
1511111111	12	12	51000	15/04/2018	15/04/2020

परिपक्वता राशि / Maturity Value : ₹ 51,000.00

प्रमाणित हस्ताक्षर / Authorised Signature : कृपया पुरा चिह्न / P.T.O.

श्री किशनरावजी राजत यांचे सभेस पत्र!

॥ ओम् ॥

ही विचार समान रावता, पित मज याव एक हो।
हो सुखी संसार सारा, मजकरी नेक हो।
ही सगी के मज तका, संकल्प अविरोधी राव।
मज मरे ही पैम से, भिक्षुनी बडे सुख राखवा। (MS. 90 / 999 / 9-2)

ईश्वरने बनावी हुई अनेक आकार और प्रकार की जातियाँ कभी भी बदल नहीं सकती।
मनुष्यने व्यवहार से बनावी हुई जातियाँ कभी भी बदल सकती हैं, मुकुर्म्म स्वभाव से।
मनुष्यकृत कपोल कल्पित जातिप्रथा का निर्मूलन हो सकता है, समझदार लोगों से।

कि.वि.राजत (बोरागांवकर) विद्यावाचस्पति

‘क्रांति - कुंज’, सीताराम नगर, लातूर - ४१३५३९



फोन. २४२२२६८६७४

दिनांक ०७/१०/२०१८

प्रति,

✓ मा. प्रधान / मंत्री

महाराष्ट्र आर्थ प्रतिनिधी सभा

नाजोशे नोंद कार्यालय

आर्थसभे परती बजनाथ

विषय :- मानव कल्याणकारी उपक्रमांमधील -

पंथ जातिप्रथा निर्मूलन अभियानासाठी

मुदत देव योजना -

महोदय,

विजंती की, राजत कल्याणकारी उपक्रमांमधील पंथ -

- जातिप्रथा निर्मूलन अभियानासाठी 'मुदत देव योजना'साठी रुपये
५१०००/- (असरी रुपये पचास हजार फक्त) मी येकने दान
देत आहे. त्या मुदत देवीच्या व्याजातून राज्यस्तरीय निबंध स्पर्धे
वक्तृत्व स्पर्धेचे नियोजन करून त्यामध्ये प्रथम क्रमांकावर येतील
त्यांना ~~सुखी~~ देवात गवे, ही स्पर्धा महाविद्यालयीन विद्यार्थ्यांमध्ये
सुरुवात करावी किंवा आपल्या नियोजना प्रमाणे व्हावी. मुदत देवीचे
नृतनौकरण होत रावे व 'नव्विस दिडोळात' दर वर्षी नोंद व्हावी.
आर्थ केले, ह्या सर्व कार्यांचा आदर्श म्हणून तिच्या स्मार्तार्थ
ही मुदत देव योजना महाराष्ट्र आर्थप्रतिनिधी सभेला
रु. ५१०००/- दान करण्यांत येत आहेत. त्याप्रमाणे आर्थकारि
सादर !

सोळात :- चेक क्र. २०२५६०

दिनांक ०७/१०/२०१८

आपला विनित

Krant

किशन वि.राजत बोरागांवकर

“क्रांती कुंज”, सीताराम नगर,

लातूर-४१३५३९ (महाराष्ट्र)

फोन. ९४२२९६८६७४

जाति तोडो!

समान जोडो!!

स्थिरनिधी स्थापन्यासंदर्भात सभेचे बँकेस पत्र !



महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

बाजेगांव, नांदेड

कार्यालय : आर्य समाज, परली-वैजनाथ जि.बीड (महाराष्ट्र) ४३१५१५

॥ओ३म्॥

॥ कृपयन्तो विश्वमार्यम् ॥

पंजीवन-एच.३३३/प.नं.६/टी.ड.७) १६७/१०४९,

स्थापना ५ मार्च १९७७



उपप्रधान
दयाराम कुंहे
आनन्दनिधी चानप्रस्थी
प्रवीरकुमार तिहारी
उपमन्त्रि
प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी
हंकरराव निराबदार
लखवीचार्ड बेलावी
पुरतकाध्यक्ष
ज्ञानकुमार आर्य
वेदगुरु.अतिष्ठता
पं.मुधाकरजी शास्त्री
वैदिक गर्जना सामादक
प्रा.वै.मनकुमार आचार्य
आर्यवीर दल अतिष्ठता
कन्व्हेट हारिमे
छन्वा संस्कार शिबिर प्रमुख
डॉ.सी.नारायण हुंगार
विनयराव देशपांडे
श्रीमती रमा र. तिहारी
प्रा.संस्कार शिबिर प्रमुख
प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी
प्रा.डॉ.अकाश कदम
स्पर्धा प्रमुख
नारायणराव कुलकर्णी
अन्तरजातिव विवाह प्रमुख
वाचिकराव मोसले
फिलनराव राकत
अॅड.जोगेंद्रसिंह चौहान
गो-कुमि विभाग प्रमुख
अॅड.विनयकुमार बाबुराव
ध्यानयोग शिबिर प्रमुख
विनयकुमार कामदे
स्वास्वरक्षा शिबिर प्रमुख
वैद्य विद्यामणि
पु.प्र.शिबिर प्रमुख
मुरस पिताबाव
संस्कार
स्वामी ब्रह्मचर्यवीर
बनीरावजी पाटील
डॉ.प्रसन्नजीवा चानप्रस्थी

प्रधान	कोषाध्यक्ष	मन्त्री
योगमुनिजी चानप्रस्थी	उग्रसेनजी राठीर	राजेन्द्रजी दिवे
बुळे (मो.८२०८२५२३३६)	परली-वै. (मो.०९४२२४९८४७)	लातूर (मो.९८२२३६५२७२)

आ.क्र. / वि.२५/१८/१४

प्रति,
मा. वारवा. धि.मारी,
भारतीय स्टेट बँक,
परली-वैजनाथ.
विषय :- संदर्भ स्थिर निधी तक्रार करवने हेतु।
महोदय,
उपरोक्त विषय के अनुसार विनंती कि जाती है की
श्री. विद्यानराव दाउतजीने आपकी पालि के नाम पर स्थिर नि.
करवने के लिए ५१,०००/- रुपय वान दिवा है। हम उस रासी
की स्थिर निधी तक्रार कायम करवनी आपकी बँके में रख
वाहेन है, कृपा करके आपकी तक्रार करव लेने का कष्ट करे
नाम निम्न प्रकार है -
१) स्थिर निधी का नाम :- सा.सा.प्र.सभा ध्याने स्व.सौ. के.रावबाई
विद्यानराव दाउत (बोरोवाकर) स्मृती स्मारक वैदिक साहित्य
प्रकाशन स्थिर निधी बनेगी।
२) मुल्य धन :- स्थिर निधी का धुलधन ५१,०००/- रुपय होगा।
३) स्थिर निधी का धुलधन कोई भी, कमीसी, वसुधा के प्रस्तावसे
ना बिजाए सकेगा। वा जहाँ रख सकेगा।
४) इस स्थिर निधी का केवल धुल निरुद्धा होत रहेगा।
५) इस स्थिर निधी का वार्षिक ध्यान सूमा रवाना श्रमिक
॥१५४१५२३४३ में सिधा भसा होगा।
६) इस स्थिर निधी के ध्यान का उपयोग अंतरजातीय विवाह
संबंधी होने के लिए छपवाने के लिए किया जायगा।
७) समा करने पर या असमय होने पर इस स्थिर निधी के
अंतिम स्वामिनी स्थापित श्रमिक आये तब निधी भसा धर निरुद्ध
होगी. इसको भी केवल ध्यान का उपयोग उद्योगागुसी
करवने का अधिकार रहेगा।

V. L. S.

काबाहयक

हा.म.प्र.स. नि.म.स.स.

म.आ.प्र.सभेतर्फे पुलवामा दहशतवादी हल्ल्याचा निषेध

एअर सर्जिकल करून ३५० आतंकवाद्यांचा खात्मा करणाऱ्या वीर जवानांचे व पायलट अभिनंदन वर्धमान यांचे हार्दिक अभिनंदन!

काश्मीरमधील पुलवामा येथे दहशतवाद्यांकडून भारतीय लष्करी सैनिकांवर झालेल्या क्रूर व अमानवी हल्ल्याचा महाराष्ट्रातील आर्य समाजांनी तीव्र शब्दात निषेध केला असून त्यानंतर भारतीय वायुदल सैनिकांनी पाक हद्दीतील दहशतवादी तळांना उद्ध्वस्त करित जवळपास ३५० आतंकवाद्यांचा खात्मा केल्याबद्दल भारताच्या शूरवीर सैनिकांचे अभिनंदन केले आहे. तसेच अभिनंदन वर्धमान या सैनिक विमान चालकाने मोठ्या धाडसाने व तितक्याच शौर्याने पाकिस्तानच्या भूमीवर आपला देशाभिमान गाजविल्याबद्दल त्यांचेही मनःपूर्वक अभिनंदन केले आहे.

एका विशेष बैठकीत सभेच्या व सर्व आर्य समाजाच्या वतीने हौतात्म्य पत्कारणाऱ्या ४४ शूरसैनिकांना भावपूर्ण श्रद्धांजली वाहण्यात आली. आमचे वीर सैनिक प्राणांची बाजी लावून सीमेवर रक्षण करतात... याची जाणीव भारतीयांनी हृदयी बाळगून आपआपल्या परीने समाजाला व देशांतर्गत जनतेला सन्मार्ग, सेवा, परोपकार, चारित्र्य संवर्धन, मानवता या मूल्यांची दिशा देण्याकरिता एक जागृत सैनिक बनून कार्य करावे, असेही आवाहन यावेळी सभेकडून जनतेला करण्यात आले.

शोकवार्ता

डॉ. विपीनचंद्र चामले यांचे निधन



लातूर येथील एकेकाळी लातूर नगरपालिकेचे सदस्य गांधी चौक आर्य राहिलेले डॉ.श्री चामले यांचे शैक्षणिक, समाजाचे माजी वैद्यकीय, सामाजिक क्षेत्रातही योगदान उपप्रधान डॉ.श्री होते. त्यांच्या पार्थिवावर पं.चंद्रेश्वरजी विपीनचंद्र चामले शास्त्री यांच्या पौराहित्याखाली वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. यावेळी प्रांतीय आर्य सभेचे मंत्री श्री राजेंद्रजी दिवे, आर्य समाज गांधी चौक लातूरचे उपप्रधान ओमप्रकाशजी पाराशर, मंत्री परांडेकर व इतर कार्यकर्त्यांसह शहरातील स्व.चामले यांचे मोठे सहकार्य होते. मान्यवर उपस्थित होते.



प्रयागबाई आघाव यांचे देहावसान

सारड गांव (ता.परळी) येथील आर्य समाजाचे मंत्री श्री भागवतराव आघाव यांच्या मातुःश्री श्रीमती प्रयागबाई ज्ञानोबा आघाव यांचे दि.२ फेब्रुवारी २०१९ रोजी वृद्धापकालीन जरावस्थेमुळे दुःखद निधन झाले. त्या ९० वर्षे वयाच्या होत्या. त्यांच्या मागे एक मुलगा, तीन मुली, सुन, जावई, नातू, नाती, पणतू असा परिवार आहे. वारकरी धार्मिक विचारांचा पगडा असलेल्या श्रीमती प्रयागबाई अतिशय मनमिळावू, सेवाभावी, श्रद्धाळू, कष्टाळू, शिस्तप्रिय आणि परोपकारी वृत्तीच्या

होत्या. कुटुंबातील सर्व सदस्यांना सुसंस्कारित करून 'एक सभ्य व धार्मिक नागरिक' घडविण्याच्या कामी त्या अग्रणी ठरल्या. वार्धक्यकाळात कुटुंबियांनी त्यांची मनोभावे सेवा केली. दिवंगत प्रयागबाईंच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी सकाळी पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. आर्यपंडित सर्वश्री वीरेंद्र शास्त्री, नयनकुमार आचार्य, लक्ष्मणराव आर्य गुरुजी यांनी हा अंत्यविधी पार पाडला. यावेळी डॉ.ब्रह्ममुनिजी, देविदासराव कावरे, रंगनाथ तिवार, डॉ.मधुसूदन काळे, गोवर्धन चाटे आदींनी श्रद्धांजली वाहिली.



तळणीकर महाराजांना पत्नीशोक

वैदिक कीर्तनाच्या माध्यमातून समाजप्रबोधन करणारे आर्य भजनीक पं.देविदासराव तळणीकर (सोमवंशी) महाराज यांच्या सुविद्य पत्नी सौ.राधाबाई सोमवंशी यांचे १० फेब्रुवारी २०१९ रोजी सायं.५.३० वा. तळणी (ता.हदगांव जि.नांदेड) येथे दुःखद निधन झाले. मृत्युसमयी त्या ८० वर्षे वयाच्या होत्या. त्यांच्या पश्चात् पती, दोन मुले

अशोक व जगन, सुना, नातवंडे असा परिवार आहे.

दिवंगत राधाबाई या एक कर्तव्यपरायणा गृहिणी म्हणून ओळखल्या जात. शांत, मनमिळावू, प्रेमळ व सुव्यवहारी स्वभावाच्या असलेल्या राधाबाईंनी श्रद्धेने जीवनभर अतिथीयज्ञ केला. वेदप्रचाराच्या निमित्ताने तळणी गावात आलेल्या सर्वश्री पं.शेषराव वाघमारे, बापुसाहेब वाघमारे, पं.नरेंद्रजी स्नेही, पं.प्रह्लादजी, पं.सुरेन्द्रपालजी, पं.कर्णसिंहजी यांसारख्या अनेक विद्वानांचे

आदरातिथ्य करून समाजासमोर आदर्श प्रस्थापित केला. तसेच आपले कीर्तनकार पति श्री देविदासरावजी महाराजांच्या वेदप्रचार कार्यात घरातील गृहस्थकर्तव्याची जबाबदारी त्यांनी प्रयत्नपूर्वक सांभाळली. दिवंगत राधाबाईंच्या पार्थिवावर दुसऱ्या

दिवशी दुपारी पं.सोगाजी घुन्नर गुरुजी व पं.धोंडीरामजी शिंदे यांच्या पौरोहित्याखाली वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. यावेळी सर्वश्री प्रभाकरराव देशमुख, नामदेवराव तांबडे, शेषराव मगर आदी आर्यसमाजी कार्यकर्ते उपस्थित होते.

धोंडिबा माने यांना पितृशोक

बेडगा(ता.उमरगा)येथील आर्य समाजाचे मंत्री श्री धोंडिबा माने यांचे वडील श्री श्रीरंगरावजी माने यांचे वृद्धापकाळाने दुःखद निधन झाले. ते ९७ वर्षांचे होते. त्यांच्या पश्चात ३ मुले, सुना, नातवंडे असा परिवार आहे. अगदी लहानपणापासूनच त्यांच्यावर आर्य समाजाचा प्रभाव होता. याच परिसरातील तपस्वी समाजसेवी आर्य व्यक्तिमत्त्व पू.हरिश्चंद्र गुरुजी(स्वामी श्रद्धानंदजी) यांचा त्यांना सहवास मिळाला. त्यांच्या

सान्निध्यात राहून वैदिक ग्रंथांचे वाचन, सिद्धांताविषयी निष्ठा आणि सेवाकार्य करण्याचे सद्भाग्य लाभले. दिवंगत माने यांची गावातील एक प्रतिष्ठित धार्मिक कार्यकर्ता म्हणून ओळख होती.त्यांच्या पार्थिव देहावर सोलापुरचे विद्वान पं.राजवीरजी शास्त्री व माडजचे पंडित श्री कर्णसिंह गौतम यांच्या पौरोहित्याखाली वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. यावेळी परिसरातील मान्यवर लोक मोठ्या संख्येने उपस्थित होते.

अंबादास कुबडे यांचे निधन

मरसूळ ता.उमरखेड जि.यवतमाळ येथील आर्य समाजाचे कट्टर कार्यकर्ते श्री अंबादासराव कुबडे यांचे दि.२१ फेब्रुवारी रोजी दुःखद निधन झाले. मृत्युसमयी ते ८७ वर्षे वयाचे होते. त्यांच्या पश्चात मुले, मुली व नातवंडे असा परिवार आहे. श्री कुबडे यांची परिसरातील एक पक्के

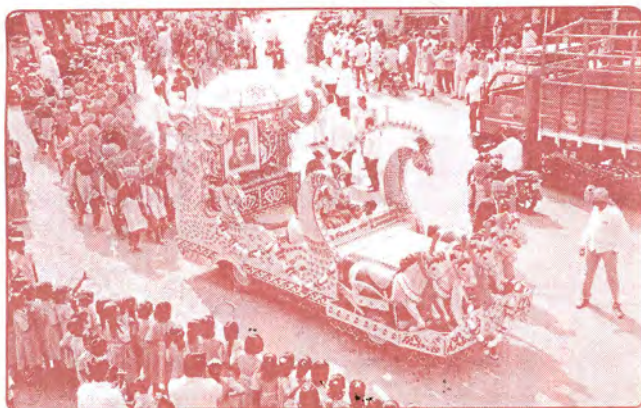
आर्य समाजी, धार्मिक व सामाजिक कार्यास हातभार लावणारे कार्यकर्ते म्हणून ओळख होती. ते दररोज अग्निहोत्र करीत असत आणि हदगांव व इतर गावात साप्ताहिक सत्संगास हजेरी लावत असत. कुबडे यांच्या पार्थिवावर पुरोहित पं.सोगाजी घुन्नर यांनी वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार केले.

वरील सर्व दिवंगत आत्म्यांना महाराष्ट्र सभा व आर्य समाजातर्फे भावपूर्ण श्रद्धांजली...! शोकाकुल कुटुंबियांच्या दुःखात आर्यजन सहभागी आहेत...



कान्हा आर्ष
गुरुकुल, नागपुर के
वार्षिकोत्सव पर
मार्गदर्शन करते
हुए परली गुरुकुल
के वानप्रस्थाश्रम
प्रमुख
पं.सोममुनिजी।

करकम्ब
जि.सोलापूर के
डी.ए.वी.स्कूल
में म.दयानन्द
जन्मोत्सव पर
यज्ञ करते हुए
यजमान
परिवार एवं
ब्रह्मा
पं.वेदसुमन
आर्य।



दयानन्द
जन्मोत्सव पर
करकम्ब गांव में
डी.ए.वी.स्कूल
द्वारा भव्य
शोभायात्रा
निकाली गयी।



लाजवाब खाना !
एम.डी.एच. मसाले
ना !

Regd. Office : MDH House,
9/44 Kirti Nagar, New Delhi-110015,
Ph : 25939609, 25937987
Fax : 011-25927710
E-mail : mdhltd@vsnl.net
Website : www.mdhspices.com

आर्य जगत के दानवीर भामाशाह
महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त
महाशय धर्मपालजी



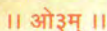
Reg.No.MAHBIL/2007/7493*Postal No.L/Beed/24/2018-2020

मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली-वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)

सेवा में,
श्री. — न्नीजी,
— श्री आर्य प्रतिनिधि सभा,
— हनुमान रोड,
— नौदली - ११० ००१

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटेर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संपर्क कार्यालय-आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१५१५ (महाराष्ट्र) इस स्थान से प्रकाशित किया।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि !



हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम के स्वाधीनता सैनिक,
हिन्दी रक्षा आन्दोलन के सत्याग्रही,
लोकमान्य शिक्षण संस्था, पानचिंचोली
(ता.निलंगा जि.लातूर) के संस्थापक, समाजसेवी व्यक्तित्व
एवं स्व.श्रीमती रुक्मिणीदेवी वासुदेवरावजी होलीकर
इन माता-पिता की पावन स्मृतिमें
प्रो.ओमप्रकाश होलीकर एवं परिवार की ओरसे
वैदिक गर्जना मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ भेंट

